सत्य ज्ञान सत्य मार्ग

लेखक

एम० एस० बहराइची

अल-क़ुरआन इन्स्टीट्यूट
बर्लिंगटन चौराहा, हुसैनगंज, लखनऊ

सत्य ज्ञान सत्य मार्ग

एम0 एस0 बहराइची

अल–कुरआन इन्स्टीट्यूट

बर्लिंगटन चौराहा, हुसैनगंज, लखनऊ–1

Satya Gyan-Satya Marg

माइनॉरटीज़ एजूकेशनल एण्ड वेल्फ़ेयर ट्रस्ट (रजि0) प्रकाशन

नाम किताब : सत्य ज्ञान–सत्य मार्ग

लेखक : एम0 एस0 बहराइची

पृष्ठ : 40

पहला संस्करण : अप्रैल 2010 संख्या 2000
दूसरा संस्करण : जनवरी 2012 संख्या 4000
तीसरा संस्करण : अप्रैल 2014 संख्या 4000
चौथा संस्करण : जनवरी 2015 संख्या 4000

मूल्य : 10/-

प्रकाशक : **अल–कुरआन इन्स्टीट्यूट**
चौथी मंजिल, बर्लिंगटन स्क्वायर,
बर्लिंगटन चौराहा, हुसैनगंज, लखनऊ–1

फोन न0 : 0522–3297421

मोबाइल : 9335226077 / 9307755206

ईमेल : alquraninstitute2003@gmail.com

वेबसाइट : www.facebook.com/alquraninstitutelko

मिलने का अन्य पता

एम0 एस0 बहराइची
536/334ए मदेहगंज, खदरा,
सीतापुर रोड, लखनऊ

अपनी बात

धरती पर बसने वाले जीवों में इंसान ही सर्वश्रेष्ठ है। उसकी ताक़त और बड़ाई उसके विवेक और बुद्धि में निहित है। ईश्वर ने उसे ज्ञान और बुद्धि जैसा असीम गुण देकर उसकी श्रेष्ठता की घोषणा स्वयं ही कर दी है।

अब यदि संसार का यही सर्वश्रेष्ठ जीव अपने से कमतर जीवों को अपना अराध्य देवता भगवान बना कर पूजने लग जाये या अपने समान किसी व्यक्ति को भगवान के समकक्ष दर्जा देदे तो उसकी श्रेष्ठता पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वभाविक है। प्रस्तुत पुस्तक में ''सत्य क्या है?.... सत्य की हक़ीक़त क्या है?...सत्य का जानना क्यों ज़रूरी है? इस दृष्टिकोण को सामने रखकर समस्त मानव जाति के ज्ञानार्थ एवं विचारार्थ कुछ दर्शाए गये बिन्दुओं पर सोचने, विचार करने, चिन्तन मनन करने और ज्ञान के उन स्रोतों को काम में लाने जो सत्य पथ पर चलने में सहायक हों, प्रेरित किया गया है जिससे मनुष्य की अन्तरात्मा को न केवल वास्तविक सन्तुष्टि एवं शान्ति प्राप्त हो अपितु परलोकीय जीवन भी सफल हो सके। ईश्वर से प्रार्थना है कि समस्त मानव जाति को सत्य की खोज के प्रति जागरूक एवं प्रेरित करे और सत्य पथ पर चलने की क्षमता प्रदान करे।

एम0 एस0 बहराइची
536 / 334 मदेह गंज,खदरा,
सीतापुर रोड, लखनऊ

बुद्धि जीवी भाइयों एवं बहनों! आज का युग विज्ञान तथा तर्क का युग है न कि तर्कहीन, अंधविश्वास व भेड़–चाल का। आज जो कुछ वैज्ञानिक तरक़्क़ी आप देख रहे हैं वह बौद्धिक चिन्तन एवं बुद्धि के सही इस्तेमाल और सामूहिक कोशिशों की देन है, जिस के कारण मनुष्य चाँद तक पहुँच गया। लेकिन ईश्वर एवं धर्म के बारे में हम चिन्तन–मनन करना आवश्यक नहीं समझते। इसी कारणवश जो जहाँ जिस घर, परिवार, समाज अथवा धर्म में पैदा हो गया वह अपने पूर्वजों के धर्म व मान्यताओं को अंध विश्वास में मानता चला जाता है और उसके अतिरिक्त कुछ सोचना एवं सुनना भी गवारा नहीं करता और न ही उसे बुद्धि और तर्क की कसौटी पर परखता है।

यदि किसी के पूर्वज क़ब्र और समाधि में आस्था रखते थे तो उसके वंशज भी इसी परम्परा को अपनाये हुए हैं। किसी के पूर्वज मूर्ति, पत्थर आदि की पूजा कर रहे थे तो वे भी वही करते दिखाई देते हैं। संसारिक वस्तुओं के मामले में हम काफ़ी कुछ खोज–बीन करते हैं और पचासों बार सोचते हैं एवं दूसरों से जो जानकार हैं परामर्श लेते हैं, परन्तु ईश्वर, मरणोंपरान्त जीवन[1] एवं धर्म के बारे में हम उदासीन व बेपरवाह हैं। धर्म एवं ईश्वर के बारे में हमारी यह उदासीनता बड़ी ख़तरनाक है जबकि ईश्वरीय धर्म दुनिया के आरम्भ से ही चला आ रहा है,जो धर्मो के इस जंगल में आज भी मौजूद है। उसके मानने वाले, उस पर अमल करने वाले और उसे दूसरों तक पहुँचाने और फैलाने वाले सदैव रहे हैं, परन्तु हमारा ध्यान इस ओर नहीं जाता।

हमारी सोच एवं चिन्ता सुबह से शाम तक केवल खाने, कमाने और अधिक से अधिक धन संचित करने एवं अधिक से

1. मरणोपरान्त जीवन के बारे में यह उदासीनता मानव जाति के लिये इतनी घातक है जिस की कल्पना नहीं की जा सकती, जब कि यह समस्या हमारे जीवन से सीधी जुड़ी हुई है।

अधिक संसारिक वस्तुएं प्राप्त करने में रहती है, जैसे एक दुकान से दो दुकान, एक कार से दो कार, एक मकानसे दो मकान आदि। यह चिन्ता व सोच उनकी भी है जिनका परिवार सीमित है और उनकी भी है जिनका परिवार बड़ा है और यह सब इसलिये है कि आराम और मौज मस्ती के साथ जीवन गुज़र सके। यही धुन, यही लगन, यही चाहत हृदय में बसाये इंसान मौत के दरवाज़े तक पहुँच जाता है। कुछ मनुष्य इन संसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं परन्तु पूर्ण सफलता उन्हें भी नहीं मिलती और अन्ततः मृत्यु के मुँह में पहुँच जाते हैं। परन्तु अधिकाँश मनुष्य अपनी चाहत, अपनी इच्छा[1] लिये दुनिया से चले जाते हैं।

कुछ मूल प्रश्नः–

जीवन क्या है? एक अमूल्य अवधि, जो ज़िन्दगी देने वाले ने हमें दी है। यह जीवन केवल एक ही बार मिलता है चाहे इसे नष्ट कर दें या सफल बना लें। तनिक विचार कीजिये कि हम कौन हैं? हम को किसने पैदा किया? पैदा करने वाला हम से क्या चाहता है? मौत क्यों आती है? इंसान मर कर कहाँ चला जाता है? धर्म आख़िर है क्या? ज़रा सोचिये, विचार कीजिये। जब एक साइकिल जैसी मशीन बिना किसी के बनाये नहीं बन सकती तो भला यह सारी सृष्टि किसी बनाने वाले के बिना कैसे बन सकती है?

आप के मस्तिष्क में यह प्रश्न भी उठता होगा कि यदि उसका बनाने वाला ईश्वर है तो वह दिखाई क्यों नहीं देता? ज़रा सोचिये कि क्या ईश्वर को देख व समझ पाने के लिये

1. इन्हीं इच्छाओं पर मनुष्य की सारी सोच केंद्रित है। इसी की पूर्ति के लिये मनुष्य हलाल हराम, न्याय, अन्याय सभी उपायों से धनार्जन के प्रयास में रात दिन एक किये रहता है। धन एवं सम्पति जुटाने, चमक–दमक का जीवन जीने की होड़ में आपको गिनती के लोग ही मिलेंगे जो इस होड़ में किसी सीमा पर पहुँच कर ठहर गये हों और जो असंख्य नंगे, भूखों, पीड़ितों एवं शोषितों के बारे में सोचते हों परन्तु अधिकाँश मनुष्यों को सम्पति एवं धनार्जन की प्यास का ऐसा भयावह रोग लगा है कि यदि समुद्र मुँह में उड़ेल दिया जाये तो भी तृप्ति न हो। ऐसे मनुष्यों को चिन्तन मनन एवं सत्य पथ की खोज के प्रति कहाँ छुट्ठी है। वह मौत से ग़ाफ़िल होकर जीवन गुज़ार रहे हैं।

आपने अपने आपको इस योग्य बनाया है? आपने अपने जीवन में कितना समय उसे समझने में लगाया है? दुनिया की मामूली डिग्रियाँ प्राप्त करने के लिये कितना समय, कितना परिश्रम और कितनी योग्यता दिखानी पड़ती है। फिर ईश्वर को देख और समझ पाने के सिलसिले में हम क्यों भूल करते हैं, क्यों लापरवाह हैं? क़ब्र, समाधि, मूर्ति और पत्थरों के आगे ध्यान जमाकर बैठ जाना ईश्वर को समझना नहीं है। हमारा कर्तव्य है कि सृष्टि और जीवन में उसके जितने संकेत व निशान मिलें हम उन्हें संचित करें और उस पर विचार करें। इसी प्रकार ईश सम्बंधी अपने ज्ञान को व्यापक व पूर्ण बनाते रहें। ईश्वर से प्रार्थना भी करते रहें कि अपना सत्य मार्ग दिखा दे, और उस पर चलने की प्रेरणा दे, तभी हम उसे जान पायेंगे। क्या कोई बालक या मनुष्य जो निरक्षर है एक ही दिन में अक्षर ज्ञान से पढ़ाई आरम्भ करके उच्च ग्रंथों का ज्ञानी बन सकता है? कदापि नहीं! तो फिर सोचिये कि क्या ईश्वर एक ग्रंथ से भी कम है कि हम उसे पूर्ण रूप से एक क्षण में जान और समझ लें।

ईश्वर का अस्तित्व, सत्य धर्म एवं विश्वासः—

मेरे भाइयों एवं बहनों! मनुष्य को सब कुछ एक साथ प्राप्त नहीं हो जाता, हर चीज़ की प्राप्ति का उचित समय होता है। ईश्वर को प्रत्यक्ष देख पाने की शक्ति आज हममें न सही लेकिन उसकी निशानियों और लक्षणों को तो हम खुली आखों से देख रहे हैं। क्या हमारा अपना अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण नहीं है। जब हम स्वयं अपने सृष्टा नहीं हैं तो आखिर कोई तो हमारा सृष्टा होगा। सृष्टि की हक़ीक़त सृष्टा के बिना सम्भव नहीं है। विज्ञान की नवीनतम खोजों और मानवीय अनुभवों और विचारों ने इस वास्तविकता के इनकार को असम्भव बना दिया है क्योंकि ईश्वर का इनकार विज्ञान, बुद्धि, अनुभव हर चीज़ का इनकार है। ईश्वर किसी के

बनाने से ईश्वर नहीं बना है, वह इसका मोहताज नहीं है कि आप उसे ईश्वर मानें तभी वह ईश्वर हो। आप चाहे मानें या न मानें वह तो स्वयं से ईश्वर है, उसका राज्य एवं प्रभुत्व अपने बल पर क़ायम है। उसने आपको और पूरी सृष्टि को स्वयं बनाया है। यह धरती, यह आकाश, यह सूर्य और चन्द्रमा और यह सारी सृष्टि उसके हुक्म की पाबन्द है, वे सारी चीजें जिनके बल पर आप ज़िन्दा हैं उसी के अधिकार सूत्र में बंधी हैं। स्वयं आपका अपना वजूद (अस्तित्व) उसके अधिकार में है। इस सत्य को आप किसी प्रकार बदल नहीं सकते।

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि ईश्वरीय विश्वास का सही रूप एवं सत्य ईश्वरीय धर्म आख़िर है क्या? दुनिया में और स्वयं अपने देश में अनेक धर्म एवं विश्वास प्रचलित हैं और सभी अपने को सही और सच्चा मानते हैं। आदमी उनमें से किसे सही और सच्चा समझे?

मेरे भाइयों एवं बहनों! यह प्रश्न इतना मुश्किल नहीं है, लेकिन हमने अपनी मानसिक संकीर्णता के कारण इसे मुश्किल बना लिया है। जबकि रब (प्रभु) का ज्ञान एवं सच्चाई की खोज प्रत्येक नर–नारी का परम कर्त्तव्य है। सब मनुष्य एक ही आदि पिता आदम की संतान हैं, इसी कारण सभी आदमी कहलाते हैं। एक ही माता पिता की संतान होने के नाते हम सब वास्तव में एक परिवार के लोग और आपस में भाई हैं। सबका पैदा करने वाला ईश्वर एक है। ज्ञान एवं चिन्तन मानव के अपने अधिकार की चीज है और ज्ञान सच्चाई तक पहुँचने का एक स्रोत है, परन्तु ईश्वरीय विश्वास एवं धर्म की सत्यता और असत्यता को परखने के प्रति हम उदासीन हैं। वस्तुतः उदासीनता अज्ञानता की जननी है। सत्य का अज्ञानता के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। सबसे बड़ी अज्ञानता इंसान का अपने पालनहार की बंदगी से विमुख होना है। सत्य एक ऐसी इकाई

है जिसके खण्ड नहीं किये जा सकते, वह एक ही हो सकता है, अनेक नहीं।

विश्वास के विभिन्न तरीके:—

एक मनुष्य केवल सृष्टिकर्ता (ईश्वर), जो निराकार है उसी की इबादत और बन्दगी करता है, उसी से मदद माँगता है, अपने दुख-सुख में उसी से विनती करता है और हर विपत्ति में उसी को पुकारता है, उसी के आगे सर नवाता है। इस मनुष्य की इबादत के स्थान विशेष कर मस्जिदें हैं। परन्तु जब वह सफ़र और यात्रा में होता है तो रेलवे स्टेशन, हवाई जहाज़ आदि अनेक स्थानों पर भी ईश्वर की बन्दगी संदेष्टा के बताये तरीके पर करता दिखाई देता है।

दूसरा मनुष्य भी ईश्वर को मानता है और पहले मनुष्य की तरह मस्जिद में ईश्वर की बन्दगी और इबादत कभी-कभी कर लेता है परन्तु मनोकामनाएं एवं मुरादों के पूरा कराने के लिए क़ब्र व समाधि के भी चक्कर लगाता है। हार फूल चढ़ाता है एवं मस्तक को क़ब्र व समाधि पर नवाता है और समझता है कि ईश्वर की खुदाई (प्रभुताई) में यह भी साझी और शरीक हैं या इन्हें ईश्वर के समक्ष सिफ़ारिश करने का अधिकार प्राप्त है।

तीसरा मनुष्य भी ईश्वर में विश्वास करता है परन्तु इस तीसरे मनुष्य की कई श्रेणियाँ हैं और सबके विश्वास एवं पूजा के अलग-अलग तरीके हैं। चूँकि सभी का वर्णन करना सम्भव नहीं है इसलिये हम इस तीसरे मनुष्य की केवल एक श्रेणी का ही वर्णन करेंगे जो हमें प्रत्यक्ष मन्दिरों में दिखाई पड़ता है। यह सृष्टिकर्ता के बजाए सृष्टि (सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, मूर्ति, पत्थर, देवी, देवता आदि) की पूजा करता है। इसकी पूजा के ढंग एवं तरीके में कोई समानता नहीं है, मार्ग चलते क़ब्र, समाधि, मन्दिर आदि पड़ने पर हाथ जोड़ना एवं गर्दन झुकाने को ही पूजा मात्र समझता है।

ईश्वरीय विश्वास के विभिन्न तरीकों के बीच यह न तरीके हमें प्रत्यक्ष दिखाई पड़ते हैं। केवल जो दीख पड़ रहा है उसी पर यदि हम गम्भीरता पूर्वक विचार करें और सोचें कि क्या ईश्वरीय विश्वास के ये तीनों तरीके सही हैं? यदि सही हैं तो यह मानना पड़ेगा कि रात और दिन, रोशनी और अंधकार, ज्ञान और अज्ञान में भी कोई अन्तर नहीं है। परन्तु आप इसे मानने के लिए तैयार न होंगे। निश्चय ही यह विचार तर्कपूर्ण नहीं है इसलिए कि मानव बुद्धि दोनों के अन्तर से परिचित है और यह बात तो सभी जानते हैं कि सत्य केवल एक हो सकता है, असत्य बहुत हो सकते हैं।

एक मूलभूत भ्राँति:—

मेरे भाइयों एवं बहनों! अधिकतर लोग यह कहते हैं कि ईश्वर तक पहुँचने के जो भी तरीके और विश्वास दुनिया में प्रचलित हैं या जितने भी धर्म संसार में फैले हुए हैं वे सभी सही, सच्चे और अच्छाई की शिक्षा देते हैं। यह बात ऊपर से तो भली मालूम होती है परन्तु है ज्ञान और बुद्धि के विपरीत। जिस ईश्वर ने दुनिया के सारे इंसानों के लिये चाहे वह निर्धन हों या धनवान, ज्ञानी हों या अज्ञानी, देहाती हों या शहरी, देशी हों या विदेशी, काले हों या गोरे, शिक्षित हों या अशिक्षित सबके लिये सूरज एक, चाँद एक, फल फूल, हवा पानी, जीवन मृत्यु आदि सब के लिये सृष्टि का नियम एक बनाया तो फिर धर्म अनेक कैसे हो सकते हैं? और न किसी प्रकार यह बात बुद्धि में आ सकती है कि ईश्वर ने मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये बहुत से ऐसे धर्म भेजे हों जो परस्पर भिन्न और एक दूसरे के विपरीत हों। यह बात ईश्वर की तत्वदर्शिता, उसके न्याय और उसकी दयालुता सबके विरूद्ध है। इसलिये यह कहना किसी तरह उचित नहीं है कि सारे धर्म ईश्वर की ओर जाते हैं, रास्ते अलग अलग हैं मंज़िल एक है। सत्य धर्म एवं सत्यता का रास्ता ईश्वर

की मान्यता एवं मर्ज़ी से जुड़ा है न कि इंसान की मर्ज़ी से।

आदि पुरूष आदम का सनातन धर्म (इस्लाम)

जो ईश्वर मनुष्य को पैदा करने वाला है वही पथ प्रदर्शन करने वाला भी है। जब ईश्वर ने सृष्टि रची तो सब से पहला मनुष्य हज़रत आदम (Adam) और सबसे पहली स्त्री बीबी हव्वा (Eve) को दुनिया में भेजा। दुनिया में जितने भी इंसान पैदा हुए वे सब एक पिता आदम और माता हव्वा की सन्तान हैं। तमाम क़ौमों की धार्मिक और ऐतिहासिक रिवायतें (साक्ष्य) इस मामले में एक है कि इंसान की नस्ल की शुरूआत एक ही जोड़े से हुई। वैज्ञानिक तहक़ीक़ात द्वारा अधिकाँश वैज्ञानिक भी इसी बात को मानते हैं, इसी लिये दुनिया के सारे इंसानों में भाई चारे का रिश्ता है।

ईश्वर ने जब आदम अलै0 को दुनिया में भेजा तो उन्हें जीवन गुज़ारने का एक तरीक़ा भी बताया और कहा कि यही तरीक़ा अपनी सन्तान को भी बतायें। जीवन गुज़ारने के इस तरीके का नाम इस्लाम था। इस्लाम इंसान का सबसे पहला धर्म है जिसका अर्थ है ''आज्ञापालन, स्वीकार कर लेना,'' अपने आपको ईश्वर के आगे समर्पित कर देना और यह मान लेना कि तमाम दुनिया का खुदा (ईश्वर) एक है। उसी की बन्दगी (इबादत) करो, उसी के आगे सर झुकाओ, उसी से मदद माँगो और उसी की मर्ज़ी एवं इच्छा के मुताबिक़ दुनिया में नेकी और इंसाफ़ का जीवन व्यतीत करो। इस्लाम नाम है उस धर्म का और उस तरीक़े पर जीवन गुज़ारने का जो ईश्वर के सन्देष्टा ईश्वर की तरफ़ से लाये थे। इस्लाम किसी क़ौम व जाति बिरादरी की मिल्कियत नहीं है और न यह किसी जाति बिरादरी का नाम है कि इसमें पैदा होने वाला हर आदमी अपने आप इस्लाम वाला हो और इस्लाम वाला बनने के लिये उसको कुछ करना न पड़े? जिन लोगों ने सन्देष्टाओं की बातों को माना और

उस पर चलते रहे वह इस्लाम वाले एवं मुसलमान कहलाये और जो लोग संदेष्टाओं के मार्ग से हट गये, चाहे स्वयं संदेष्टा की अपनी संतान ही क्यों न हो वह काफिर एवं मुश्रिक कहलाये। मुश्रिक का अर्थ है ईश्वर की खुदाई में दूसरों को साझीदार बनाना, शरीक करना। कुफ़्र का असल अर्थ सत्य को छुपाने, इनकार करने व परदा डालने के हैं। ऐसे मनुष्य को काफ़िर इस लिये कहा जाता है कि उसने अपनी फ़ितरत (प्रवृति) पर नादानी एवं नासमझी क़ा परदा डाल रखा है जबकि वह इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा हुआ, उसका सारा शरीर और शरीर का हर भाग ईश्वरीय कानून (इस्लाम) की फ़ितरत पर काम कर रहा है। सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र सभी उसी क़ायदे कानून से बंधे हुये हैं। काफ़िर गुण वाचक शब्द है, अपमान बोधक शब्द नहीं।

सन्देष्टाओं का आना, धर्म व पंथ का बनना

आदम अलै0 अपने पैदा करने वाले का पैग़ाम लेकर दुनिया में आये। आदम अलै0 की संतान बढ़ती गई, फैलती गई, बहुत सी बस्तियाँ बस गयीं। जीवन की अवधि पूर्ण हुई तो आदम अलै0 परलोक सिधार गये। समय बीतता गया, बाप दादा के बताये सिखाये ईश्वरीय तरीके एवं विश्वास में बिगाड़ आरम्भ हुआ और धीरे धीरे लोग असल ईश्वरीय मार्ग से दूर हटते चले गये। शुद्ध नीतियां, निर्देश एवं धारणायें त्याग कर ग़लत राहों पर चल पड़े यहाँ तक कि जो ईश्वरीय आदेश दिये गये थे, उन्हें भी उन्होंने या तो अपनी भूल एवं असावधानी से भुला दिया या दुष्टता से उसे विकृत कर के अपनी इच्छाओं के अनुसार ढाल लिया। पूजा और इबादत के नये–नये तरीक़े अपना लिये। ईश्वर ने पुनः मेहरबानी की और उसने इंसानों में से जिसको बेहतर समझा अपना पैग़ाम पहुँचाने के लिये चुन लिया, यही

सन्देष्टा और पैग़म्बर कहलाये। कुछ लोगों ने सन्देष्टाओं की बात मानी और असल ईश्वरीय मार्ग पर वापस आ गये और कुछ ने नहीं मानी, हठधर्मी पर उतर आये। इस प्रकार न मानने वालों के अलग–अलग धर्म व पंथ बनते गये। मानने वालों का गिरोह सदैव शुरू से एक रहा और न मानने वाले अनेक गिरोहों और पंथों में बटते गये। जैसे–जैसे आदम अलै0 की संतान संसार में फैलती गई ईश्वर ने प्रत्येक जाति एवं प्रत्येक भूमण्डल के लिये अलग अलग सन्देष्टा भेजने का प्रबन्ध किया और फिर कुछ–कुछ अन्तराल से निरन्तर भेजता रहा। उन सन्देष्टाओं का कर्त्तव्य यह था कि लोगों को वैध नीति का सन्देश दें और जिन आदेशों को उन्होंने विलीन, लुप्त अथवा विकृत कर दिया था उसे पुनः यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर दें। यह सन्देष्टा सहस्रों वर्ष तक आते रहे और इस्लाम धर्म का वही सन्देश और आदेश प्रस्तुत करते रहे जो हज़रत आदम अलै0 लेकर आये थे। परन्तु साधरणतयः होता यही रहा कि मनुष्यों की एक बड़ी संख्या ने अपने संसारिक लाभ, अपनी सुख भोग वासना और अनेक अज्ञान पूर्ण द्वेष एवं पक्षपात के कारणवश इस सत्य सन्देश को न केवल अस्वीकार किया अपितु हठधर्मी का प्रदर्शन कर सन्देष्टाओं का विरोध किया। जिन्होंने स्वीकार करके आज्ञाकारी का रूप धारण किया वे भी शनैः शनैः बिगड़ते चले गये, यहाँ तक कि ईश्वरीय आदेशों को पूर्ण रूप से खो बैठे। ईश्वरीय पुस्तकों एवं ईश्वरीय वाणी में अपने विचारों का मिश्रण कर के उसे परिवर्तित एवं विकृत कर दिया। जितना समय बीतता गया ग्रंथों में इच्छानुसार मिश्रण एवं परिवर्तन होता गया और वास्तविकता पर अंधविश्वास छाता चला गया और धीरे धीरे सम्पूर्ण वास्तविकता लुप्त हो गयी।

धर्म के नाम पर शोषण के षड़यंत्र

धर्म के नाम[1] पर अन्यायी वर्ण व्यवस्था, ऊँच नीच, छुआ छूत, श्रेष्ठता और नीचता के मापदण्ड निश्चित ही नहीं किये गये, अपितु सन्देष्टाओं एवं महापुरूषों के व्यक्तित्व एवं चरित्र तक को दूषित कर डाला गया और अपने भोग विलास के लिये क्रूर देवदासी प्रथा को ईश्वर की प्रसन्नता का अंग बना दिया गया। साँप, चूहे, पीपल से लेकर लिंग तक की पूजा शुरू कर दी गई और सम्भोग वासना की मूर्तियाँ तक पूजा घरों में रख दी गयीं। निराकार ईश्वर के भोंडे स्वरूप मूर्तियों के रूप में बना कर पूजे जाने लगे। परलोक, आख़िरत, स्वर्ग नर्क की धारणा से हट कर पुनर्जन्म एवं आवागमन की धारणा विकसित की गई। जबकि "मंत्रकाल" और "ब्राह्मण काल" तक में पुनर्जन्म की धारणा नहीं थी। पित्रलोक में विश्वास किया जाता था। डा0 राधा कृष्णन आदि ने स्पष्ट कहा है कि पुनर्जन्म की कल्पना अवैदिक है, जो लोग वेद से पुनर्जन्म सिद्ध करते हैं वे खींच तान से काम लेते हैं। शंकराचार्य ने भी व्यास के कथन को प्रस्तुत करते हुए पुनर्जन्म की धारणा का विरोध किया है। वे लिखते हैं कि सृष्टि के आरम्भ में कौन सी नेकी बढ़ी थी कि

1. धर्म के नाम पर भारत में इतने उत्पीडन हुए हैं जिनकी मिसाल अन्य जगह दुर्लभ है। श्म्बूक का वध धर्म के नाम पर ही किया गया था। एकलव्य का अंगूठा कटवाने वाले भी धर्माधिकारी ही थे। धर्म की आड़ में ही वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना हुई जो कालान्तर में शूद्रों के उत्पीड़न का सबसे मजबूत औजार बनी। आखिर यह धर्म ही की तो आज्ञा है कि शूद्रों को मिट्टी के टूटे पात्रों में ही खाना दिया जाना चाहिये। शूद्रों और महिलाओं को धर्म के नाम पर ही तो अधिकार विहीन बना कर रखा गया। धर्म ही तो यह कहता है कि यदि कोई शूद्र वेद वाणी सुन ले तो उसके कान में पिघला शीशा डाल देना चाहिये। शूद्रों और नारियों को शस्त्र व शास्त्र से धर्म ने ही वंचित किया। इतना ही नहीं धर्म की आज्ञा से एक पूरे के पूरे तबके को अछूत बना दिया गया। हिन्दू धर्म विश्व का अकेला धर्म है जो जात–पात, छुआ–छूत और ऊँच–नीच की संस्कृति को धार्मिक वैधता प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में उसे उचित ठहराता है। भारत के दलित आज भी मुक्ति की आशा में खड़े हैं और हिन्दू धर्म ने उनकी मुक्ति के मार्ग में स्मृतियों, संहिताओं और पुराणों के रूप में ऐसे जबरदस्त पहरेदारों को बिठा रखा है कि वह मुक्ति के लिये छटपटा तो सकते हैं लेकिन मुक्त नहीं हो सकते। आज भी हिन्दू समाज की सारी मान्यतायें दलित विरोधी हैं।
(दैनिक राष्ट्रीय सहारा लखनऊ के 10 अप्रैल 1999 ई0 के सम्पदकीय से उद्धृत)

एक राजा बन गया दूसरा रंक, एक मनुष्य बन गया दूसरा पशु। आज पुनर्जन्म और आवागमन एक ही अर्थ में समझे और बोले जा रहे हैं। जबकि आवागमन प्राकृतिक विधान के विपरीत है। प्राकृतिक विधान तो यह है कि आम से आम, इमली से इमली, इंसान से इंसान, गाय से गाय, बकरी से बकरी, ग़र्ज़ हर जीव से वही जीव पैदा होते हैं और आवागमन कहता है कि इंसान मृत्यु के बाद अन्य जीव–जन्तुओं में जन्म लेकर कर फिर इंसान के रूप में जन्म लेता है। आवागमन एवं पुनर्जन्म की यह धारणा जाति, वर्ण, ऊँच–नीच, छूत–छात की व्यवस्था को अपनी परिधि में लिये हुए है इस व्यवस्था ने करोड़ों मनुष्यों को मनुष्यता के साधारण अधिकारों तक से वंचित कर दिया, उन्हें कुत्ते से भी ज़्यादा हीन और तुच्छ इसलिये समझा जाने लगा कि वह पूर्वजन्म के पापी हैं। इस दृष्टिकोण को लेकर आज भी बहुत से लोग अछूतों, निर्धनों, अनाथों एवं दुखियों की सहायता करने को, उन्हें सहयोग व सम्मान देने को जुर्म और पाप समझते हैं। मानव समाज के निर्माण के लिए स्त्री व पुरूष दोनों का होना जरूरी है। बिना दोनों के नस्ल चल नहीं सकती। योनि की यह भिन्नता एक आवश्यकता है। फिर स्त्री जाति के जन्म को पुनर्जन्म के दृष्टिकोण से पाप का परिणाम कैसे माना जा सकता है? मनुष्यों की योनि में भी श्रेष्ठता और नीचता इसी आवागमन[1] की धारणा का परिणाम है जो न तर्कसंगत है न न्यायसंगत और न ही बुद्धिसंगत।

उपरोक्त प्रश्नों के अतिरिक्त पुनर्जन्म की धारणा पर निम्न प्रश्न और भी खड़े किये जा सकते हैं। (1) यदि किसी व्यक्ति ने किसी की हत्या कर दी तो यह हत्या उसके पूर्व जन्म के पाप का परिणाम ही तो है। ऐसी स्थिति में हत्यारे

1. अधिक जानकारी के लिये श्री इमामुद्दीन झंडा नगरी की पुस्तक "आवागमन" एवं मो0 फारूक खां की पुस्तक "पुनर्जन्म" का अध्यन करें।

को सजा देना पुनर्जन्म के दृष्टकोण से अत्यन्त गलत होगा। (2) पुनर्जन्म के दृष्टिकोण से जितना अधिक दूध, दही, घी, मांस मछली, पशु पक्षी, जड़ी बूटियाँ, फलदार वृक्ष आदि मनुष्यों को प्राप्त होता है वे सब बुराई एवं दुष्कर्म का फल हैं। फिर तो यह बुरा कर्म समाज के लिए वरदान है और दुष्कर्म करने वाले समाज के ज़्यादा उपकारक हैं। क्योंकि समाज को बुरे कर्मों के फलस्वरूप ही दूध दही या अन्य चीज़ें मिल रही हैं। (3) मानव शरीर बड़े शुभ कार्यों और तपस्या के बाद मिलता है। आज हम देखते हैं कि अधिकाँश मनुष्य बुराइयों में लिप्त हैं। इस दृष्टिकोण से आबादी घटनी चाहिये परन्तु वह बढ़ रही है। यह समस्त प्रश्न पुनर्जन्म की असत्यता को प्रमाणित करते हैं। इसके निराधार होने के लिये यह प्रमाण ही काफ़ी होगा कि एक हीन प्राणी यह नहीं जानता है कि वह किस पाप के कारण इस हीन योनि में आया है और न ही मनुष्य को पता होता है कि वह किस कर्म के फलस्वरूप इस उच्च योनि में आया है। इसके बाद भी हमारे देश के समाज का एक बड़ा वर्ग ईश्वर की दी हुई बुद्धि और विवेक का प्रयोग न कर भारतीय संस्कृति की महानता पर गर्व कर रहा है अजन्ता, एलोरा खजुराहो की कृतियों को कथित भगवानों, महात्माओं की रास लीलाओं को आध्यात्मिकता का नाम दे रहा है। वस्तुतः ईश्वर के प्रति जवाब देही से इनकार की यही वह पुर्नजन्म की बुनियादी धारणा है जिसने मानव को सत्य की खोज के प्रति न केवल उदासीन किया अपितु मानव के अन्दर जो कुछ भी बिगाड़ आ रहा है वह इसी गलत धारणा का परिणाम है। नैतिकता व नैतिक मूल्यों के विकास के लिये प्रेरणा केवल स्वर्ग, नर्क के विश्वास से ही सम्भव है और यही सच भी है। मनुष्यों को अच्छे कर्मों के फलस्वरूप स्वर्ग का सुख तथा बुरे कर्मों के फलस्वरूप नरक की यातनाओं का भोगी बनना ही एक ऐसा धार्मिक विश्वास है जो सत्य मार्ग की ओर चलने को बाध्य करता है।

अन्तिम ईश-दूत का आगमन

इन सारे बिगाड़ों के सुधार हेतु सन्देष्टा आते रहे। संसार का कोई ऐसा क्षेत्र नही है जहाँ ईश्वर के सन्देष्टा न आये हों। उन सभी का धर्म एक ही था और वह यही धर्म इस्लाम था जिसको अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 लेकर आये। आम तौर पर लोग इस गलतफ़हमी में हैं कि इस्लाम का आरम्भ हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से हुआ, यहाँ तक कि आपको इस्लाम का संस्थापक भी कह दिया जाता है। यह बात पूर्णतयः आज्ञानता पर आधारित है। इस्लाम कदापि कोई नया धर्म नहीं है, वास्तविकता की दृष्टि से सच्चा धर्म हमेशा एक रहा और उसकी मौलिक शिक्षायें भी एक रहीं हैं। इस्लाम धर्म संसार के सारे मनुष्यों के लिये है और मुहम्मद सल्ल0 सारे मनुष्यों के लिए ईश्वर की ओर से अन्तिम सन्देष्टा के रूप में भेजे गए हैं। अब आप सल्ल0 के बाद सांसार में कोई नया नबी (सन्देष्टा) आने वाला नहीं है। आप के द्वारा सत्य धर्म को पूर्ण रूप देकर सुरक्षित कर दिया गया है। यही कारण है कि 1400 वर्ष बीत जाने और बौद्धिक विकास के बावजूद कोई और विश्व व्यापी धर्म सामने नहीं आया।

प्रथम मानव आदम अलै0 भी इस्लाम के सन्देष्टा थे, प्रारम्भिक वैदिक आर्यो का धर्म भी इस्लाम था, यहूदी भी प्रारम्भ में इस्लाम पर थे, औ. ह़ज़रत ईसा अलै0 भी इस्लाम धर्म का ही सन्देश लाये थे। सन्देष्टाओं की अन्तिम कड़ी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 हैं।

अन्तिम संदेष्टा के जन्म के समय संसार की स्थिति

जिस समय हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का जन्म हुआ संसार की क्या दशा थी, इसको जानने के लिये इतिहास के पन्नों को पलटें तो आप देखेंगे कि उस समय सत्य धर्म पूरे

संसार में अपने वास्तविक रूप में कहीं भी विद्यमान नहीं था। भारत में श्री राम चन्द्रजी, श्री कृष्ण जी व गौतम बुद्ध का समय ईसा अलै0 के बहुत पहले का था। ईरान के जरतुश्त और चीन के कनफ़्यूशस का समय भी अन्यन्त प्राचीन है। जरतुश्त के धर्म में एक ईश्वर के स्थान पर दो ईश्वर की कल्पना कर ली गई थी जिसमें एक ईश्वर नेकी का था तो दूसरा बदी (बुराई) का। भारत जो आज आपके सामने है, उस समय कैसा रहा होगा? कल्पना कर लीजिये अथवा प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं धर्म[1] के रंग रूप को ऐतिहासिक दस्तावेजों में पढ़ लीजिये।

इस प्रकार जो भी और जहाँ कुछ भी धर्म के रूप में शेष रह गया था वह अपनी वास्तविकता खोकर नये नामकरण के रूप में परिवर्तित हो चुका था। यहूदी धर्म यहुदा क़बीले के नाम पर, बुद्ध[2] धर्म महात्मा बुद्ध के नाम पर, जरतुश्ती धर्म

1. महात्मा गौतम बुद्ध से पहले भारत में (बासठ) 62 तरीक़-ए-जिन्दगी व धर्म पाये जाते थे। आर्य सभ्यता एवं संस्कृति जिन विश्वास व मान्यताओं पर आधारित है वह इन 62 धर्मों में से एक है। (डा0 तुलसी राम रविवार संस्करण दि पायनियर 2 मई 1999 ई0)

2. महा प0 राहुल सांस्कृत्यान का कहना है कि हिन्दूमत ने बौद्ध मत को शताब्दियों पहले अपनी बहन बना कर ख़त्म कर दिया था (डा0 तुलसी राम रविवार संस्करण दि पायनियर 2 मई 1999 ई0) बौद्ध मत के बहुत गहरे अध्ययन से केवल इतना अनुमान लगाया जा सकता है कि उस उच्च संकल्प मनुष्य ने ब्राह्मणत्व की बहुत सी त्राुटियों का सुधार किया था और विशेषतः उन असंख्य सत्ताओं के ईश्वरत्व का खण्डन किया था जिनको उस काल के लोगों ने अपना उपास्य बना लिया था परन्तु उनके देहान्त को पूरी एक शताब्दी भी नहीं बीती थी कि वैशाली की सभा में उनके अनुयायियों ने उनकी समस्त शिक्षाओं को परिवर्तित कर दिया। यथार्थ सूत्रों के स्थान पर नये सूत्र बना लिये और आधार भूत सिद्धान्तों तथा उन पर निर्धारित व्यवस्थाओं में अपनी इच्छाओं तथा विचारों के अनुसार जिस प्रकार चाहा हस्तक्षेप किया। एक ओर उन्हों ने बुद्ध के नाम से अपने मत के ऐसे विश्वास नियत किये जिन में ईश्वर का सिरे से कोई अस्तित्व ही न था और दूसरी ओर बुद्ध को सर्वार्थ सिद्ध सर्व बुद्धि जगताधार और एक ऐसा अस्तित्व मान लिया जो प्रत्येक युग में संसार के सुधार हेतु बुद्ध बन कर प्रकट हुआ करता है। उनके जन्म जीवन और गत तथा भावी जन्मों के सम्बन्ध में ऐसी ऐसी अदभुत गाथाएं बना लीं जिन को (शेष अगले पृष्ठ पर)

जरतुश्त[3] के नाम पर और ईसाई धर्म हज़रत ईसा अलै0 के नाम पर विकसित हो गए थे। इसी तरह दूसरे और धर्मों का भी यही हाल हुआ और अनेक वास्तविक नाम लुप्त हो गए। हर क़ौम ने अपना अलग अलग धर्म व पंथ बना लिया। ईसाई धर्म एक के स्थान पर तीन खुदा स्वीकार करने लगा।

विश्वास के बिगाड़ के साथ तौर तरीक़े एवं इबादत के ढंग और रूप बदल गये। नग्नता और अश्लीलता को भी धर्म का अंग बना दिया गया। मानवता का विभाजन कर अनेक श्रेणी एवं वर्ग में बाँट दिया गया। समाज के एक बड़े वर्ग को दास और सेवक बनाया गया। मानवता की यह दुर्दशा किसी एक देश में न थी, थोड़े बहुत अन्तर के साथ सभी देशों में पाई जाती थी।

अरब की स्थित और अन्तिम संदेष्टा का जीवन

अरब तो बिगाड़ में और आगे थे। कुरैश गोत्र जिसमें महान ईश दूत हजरत मुहम्मद सल्ल0 का जन्म हुआ अपनी श्रेष्ठता के गर्व में चूर था। किसी को अपनी जाति का समकक्ष नहीं समझते थे। दासता की प्रथा प्रचलित थी और उसने ऐसा नीच और घृणित रूप धारण कर लिया था कि जिसकी कल्पना भी कठिन है। पशुओं के हाट के समान दासों और दासियों

पढ़कर प्रोफेसर विलयम जैसे अनुसन्धेय चकित होकर यह कह उठते हैं कि इतिहास में वस्तुतः बुद्ध का कोई आस्तित्व ही नहीं है। तीन चार शताबदी के भीतर इन गाथाओं ने बुद्ध मे ईश्वरत्व का रंग उत्पन्न कर दिया और कनिष्क के काल में बौद्धमत के पंडितों तथा नेताओं की एक बहुत बड़ी सभा ने (जिसका अधिवेशन कशमीर में हुआ था) निश्चय कर लिया कि बुद्ध वास्तव में ईश्वर का भैतिक रूप था। अन्य शब्दों में ईश्वर उसके रूप में प्रकट हुआ था।

("कुरआन और पैग़म्बर सल्ल0" अबुल आला मौदूदी)

3. कहा जाता है कि जरतुश्त ईरान के ज़िला आज़र बाईजान में लगभग पौने तीन हज़ार वर्ष पहले हुए थे परन्तु आपके बारे में कुछ ज्यादा ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इस समय जरतुश्तियों की संख्या संसार में डेढ़ लाख से अधिक नहीं है। जरतुश्ती धर्म की पुस्तक "अवेस्ता" हैं (जरतुश्त लेखक मज़हर अन्सारी देहलवी)

की भी मण्डी लगती थी। अरब क़बीलों में सभ्यता और सभ्य नागरिक जीवन की झलक देख पाना कठिन था। यह ऊँट चराने वाले दुनिया से निराले थे, इनका कोई राजा न था, शिक्षा नाम को न थी, व्यभिचार आम था। शराब जुआ पूरे समाज में प्रचलित था। लड़ाकू इतने कि तनिक सी बात पर क़बीलों के क़बीले भड़क उठते और लड़ाइयों का सिलसिला शताब्दियों तक चलता रहता। पूरी क़ौम पत्थर एवं मूर्तियों को पूजती थी। स्त्रियाँ नंगे होकर काबा की परिक्रमा करती थीं। काबा तीन सौ साठ बुतों एवं मुर्तियों का केन्द्र था। गिने चुने लोग ही शेष रह गये थे जो अपने को बुराइयों से बचाये हुए थे। इन हालात और ऐसी स्थित में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का जन्म हुआ। आपके जीवन का आरम्भ एक यतीम (अनाथ) अत्यन्त बेचारगी और असहाय स्थिति के बच्चे के रूप में होता है। बचपन ही में माता पिता एवं दादा का साया सर से उठ जाता है। होश संभालते हैं तो अरब लड़कों के साथ बकरियाँ चराने लगते हैं। न वहाँ पाठशाला, न पढ़ाने वाले, न कोई शिक्षा की व्यवस्था, इसलिये आप निरक्षर ही रहे। जवान होते हैं तो सौदागरी में लग जाते हैं। कैसा दूषित नगर, कैसा दूषित समाज, कैसा दूषित वातावरण, फिर उन्हीं के बीच उठना, बैठना, चलना, फिरना और अपने को हर प्रकार की बुराई से बचाना एवं दूर रखना, यह कोई आसान कार्य न था। गन्दे पानी में कमल के तुल्य अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। इसी दूषित वातावरण में 25 वर्ष के हो गये और अभी तक आप अविवाहित थे। आप जानते हैं कि यह युवा काल कैसा तूफ़ानी होता है। कहावत है कि जवानी दीवानी और फिर ऐसा वातावरण और ऐसा युवक जिसके माता पिता का देहान्त बाल्यावस्था में हो गया हो। आप कैसे आचरण की आशा कर सकते हैं? परन्तु आप सल्ल0 अपने स्वभाव से ही पवित्र और नैतिक चरित्र के मालिक थे। भोग विलास उन्हें छू

तक न गया था। बचपन से ही आप सल्ल0 निर्धनों, अनाथों और वंचितों के दोस्त थे। 25 वर्ष की अवस्था में अपने से बड़ी 40 वर्षीय विधवा स्त्री से विवाह किया और तब तक उनसे सन्तुष्ट रहे जब तक वह देहावसान न कर गयीं। आपने विधवाओं के दर्द को समझा और अपने इस आदर्शमय कार्य से विधवाओं को नया जीवन दिया। आपने सारा जीवन अत्यन्त सादगी, ईमानदारी, सच्चाई तथा सदाचारी के रूप में व्यतीत किया। सारा नगर आपकी नैतिकता व सदाचार की प्रशंसा करता था और हर कोई आपको सादिक (सच्चा) अमीन (अमानतदार) कह कर पुकारता था। लगभग 40 वर्ष तक आप इसी प्रकार की पवित्र ज़िन्दगी गुज़ारते रहे और नगर वासियों की धार्मिक, नैतिक एवं समाजिक भ्रष्टता तथा दुरावस्था को देख–देख कर कुढ़ते रहे। अन्ततः इस दूषित समाज एवं दूषित वातावरण से ऊब कर आबादी से दूर एक पहाड़ की गुफ़ा में जा कर बैठने और चिंतन–मनन करने लगे। अचानक एक दिन गुफ़ा में वही फ़रिश्ता (जिब्राईल) प्रकट होता है, जो पहले के ईशदूतों को ईश्वरीय शिक्षा व आदेश पहुँचाया करता था। उसने आपको ईश्वर की ओर से ईश–सन्देष्टा के पद पर नियुक्ति का शुभ सन्देश सुनाया। उसी समय से पवित्र क़ुरआन के अवतरण का भी सिलसिला आरम्भ हुआ। कभी निरन्तर, कभी थोड़े अंतराल और कभी लम्बे अन्तराल के बाद क़ुरआन वाणी के रूप में अवतरित होता रहा। जो क़ुरआन आज संकलित रूप में हमारे समक्ष है वह 23 वर्षों में अवतरित हुआ।

जीवन परिवर्तन एवं उपदेश की शक्ति

सन्देष्टा नियुक्ति के शुभ सन्देश के बाद अचानक आपके जीवन में ऐसा परिवर्तन हुआ और आप में ऐसी शक्ति आई जो इस से पहले न देखी गयी थी। आप गुफ़ा से निकल कर अपनी क़ौम के पास आते हैं और पुकार कर कहते हैं कि– "ऐ क़ौम

के लोगो! ये बुत और मूर्तियाँ जिन्हें तुम अपने हाथों बनाते और पूजते हो तुम्हारी कोई कामना पूरी नहीं कर सकते, इन्हें छोड़ दो। यह पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र और यह सारी सृष्टि सब ईश्वर ने पैदा की है, वही सबका पैदा करने वाला है, जिन्दगी और मौत का वही मालिक है, रोज़ी देने वाला वही है। सब को छोड़ कर उसी को पूजो, जो कुछ माँगना है उसी से माँगो। यह चोरी यह लूट मार, यह शराब, यह जुआ, यह व्यभिचार जो तुम करते हो सब पाप है, उन्हें छोड़ दो, ईश्वर इन बातों को पसन्द नहीं करता। सच बोलो, न्याय करो, जो कुछ लो हक़ के साथ लो, जो कुछ दो हक़ के साथ दो। तुम सब इंसान हो और सब इंसान बराबर हैं। बड़ाई और शराफ़त इंसान की नस्ल, ख़ानदान, रंग–रूप, धन दौलत में नहीं है, बल्कि ईश भक्ति, नेकी व पवित्रता में है। जो इंसान ईश्वर से डरता है नेक और पवित्र है वही ऊँचे दर्जे का इंसान है। मरने के बाद तुम सबको ईश्वर के समक्ष उपस्थित होना है। उसके यहाँ न किसी की सिफ़ारिश काम देगी, न कोई रिश्वत चलेगी, न किसी का गोत्र पूछा जायेगा, वहाँ केवल ईमान और नेक अमल की पूछ होगी। जिसके पास यह सामान होगा वह स्वर्ग में जायेगा और जिसके पास इनमें से कुछ न होगा वह अभागा (बदनसीब) नरक में डाला जायेगा"।

विरोध, धमकी, अत्याचार एवं प्रलोभन

आपके इस उपदेश को कुछ लोगों ने ध्यान से सुना परन्तु बड़े बड़े सरदार उत्तेजित हो उठे और बुरा भला कहते हुए वापस चले गये। संसार में जब भी ईश्वर के सन्देष्टा आये या धर्म सुधारक उठे उनका विरोध कभी जन साधारण की ओर से नहीं हुआ, विरोध किया तो शासकों ने, सरदारों ने, स्वार्थी धर्म गुरूओं ने। जन साधारण को बहकाने वाले भी यही और धमकाने वाले भी यही थे। मक्का के सरदारों को जब धमकाने,

बहकाने और जन साधारण पर उत्याचार करके भी सफलता नहीं मिली तो सारे सरदार एकत्र होकर आपके चचा अबूतालिब के पास आये और कहा कि तुम्हारा भतीजा हमारे देवताओं का अपमान करता है और हमारे पूर्वजों को मूर्ख और धर्म भ्रष्ट ठहराता है। आप उसे समझाइये और रोकिये नहीं तो हम सब मिलकर उसका वध कर देंगे, फिर आप हम सबका कुछ बिगाड़ न सकेंगे। अबूतालिब में सभी क़बीलों से अकेले लड़ने की शक्ति न थी, उन्होंने महा ईशदूत से कहा "प्यारे भतीजे! मुझ पर इतना भार न डालो जिसे मैं सहन न कर सकूँ।" आप सल्ल0 ईश्वर के संदेष्टा थे और ज़ाहिर है कि आपका असल सहारा और भरोसा ईश्वर पर ही था, इसलिए चचा को भी अपनी हिमायत एवं समर्थन में कमज़ोर पड़ते देखकर आप ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया "चचा! उस ईश्वर की कसम जिसके क़ब्जे में मुहम्मद की जान है, यदि ये लोग मेरे एक हाथ पर सूरज और दूसरे हाथ पर चाँद लाकर रख दें, तब भी मैं अपने कर्तव्य का त्याग न करूँगा। ईश्वर इस कार्य को पूरा करेगा या मैं इस मार्ग पर हलाक हो जाऊंगा।

जब मक्का के सरदारों ने भय दिलाकर, धमकाकर और अत्याचार करके भी सफलता होती न देखी तो उन्होंने लालच व प्रलोभन का सहारा लेकर अपने उद्देश्य की पूर्ति का निश्चय किया और अपने में से एक सरदार को जिसका नाम उत्बा था आपके पास भेजा। उसने कहा "मुहम्मद! तुम यह जो कुछ कर रहे हो इससे तुम्हारा उद्देश्य क्या है? मक्के की सरदारी चाहते हो? या किसी प्रतिष्ठित कुल की सुन्दर युवती से विवाह अथवा धन चाहते हो? यदि तुम मक्का का राज्य चाहते हो तो हम इसके लिये भी तैयार हैं, किसी सुन्दर स्त्री से विवाह चाहते हो तो विवाह करा दें, यदि धन चाहते हो तो धन का ढेर लगा दें, परन्तु तुम अपना प्रचार बन्द कर दो।" उत्बा को पूर्ण विश्वास

था कि आज वह सफल होकर ही लौटेगा परन्तु आपने उत्तर में कुरआन की कुछ आयतें जो आप पर अवतरित हुई थी पढ़कर सुना दी। उत्बा बहुत प्रभावित हुआ। उसने लौट कर अपने साथी सरदारों से कहा– "आज हमने वह वाणी सुनी है जो मुहम्मद प्रस्तुत करते हैं, वह मनुष्य की वाणी नहीं है, कोई और ही चीज़ है। मैं तुम सबको सलाह देता हूँ कि उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो। उनके काम में हस्तक्षेप न करो। यदि वह सफल हो गये तो तुम्हारे कुल का सम्मान व प्रतिष्ठा बढ़ेगी अन्यथा अरब स्वयं ही उनको समाप्त कर देंगे"। परन्तु जिद्दी व हठवादी सरदारों ने उत्बा की उचित सलाह को अस्वीकार कर दिया।

फिर क्या था, अपमान और अत्याचार का असीमित सिलसिला और तेज़ हो गया। वे लोग भी जो आपके सन्देश पर ईमान नहीं रखते थे यह कहने पर विवश थे किः– ऐ मुहम्मद! हम तुमको झूठा नहीं कहते बल्कि उसका इनकार करते हैं जो तुम पर अवतरित होता है और जिसने तुम्हें सन्देष्टा बनाया।

इस्लाम स्वीकारने वालों की हृदय विदारक गाथा

आरम्भ काल में इस्लाम स्वीकारने वाले बेकसूर पुरूषों और स्त्रियों पर ढाये गये अमानवीय अत्याचारों के ऐतिहासिक वृतान्त को पढ़ और सुन कर कौन सा हृदय है जो रो न देगा। किस प्रकार एक बेक़सूर स्त्री हज़रत सुमय्या को बेरहमी से बरछे मार–मार कर हलाक किया गया, हज़रत बिलाल को तपती रेत पर घसीटा जाता था, हज़रत यासिर जिनकी टाँगों को दो ऊँटों से बाँध दिया गया और फिर उन ऊँटों को विपरीत दिशा में हाँका गया, हज़रत ख़ब्बाब को आग के अंगारों पर लिटा कर एक निर्दयी ज़ालिम उनके सीने पर खड़ा हो गया ताकि वह हिल–डुल न सकें, यहाँ तक की उनकी खाल जल गयी और चर्बी पिघलकर निकल पड़ी। हज़रत ख़ब्बाब बिन अदी के शरीर के मांस को निर्ममता से नोच–नोच कर तथा उनके

अंग काट–काट कर उनकी हत्या की गई। इन यातनाओं के बीच उनसे पूछा गया कि क्या वह यह न चाहेंगे कि उनके स्थान पर यह यातना पैगम्बर मुहम्मद सल्ल0 को दी जाए? तो पीड़ित ख़ब्बाब ने ऊँचे स्वर में कहा कि खुदा की क़सम मुझे तो इतना भी गवारा नहीं कि तुम मुझे छोड़ दो और उसके बदले में मुहम्मद सल्ल0 के पैरों में एक काँटा भी चुभ जाये। काँटा चुभने की मामूली तकलीफ से बचाने के लिए वे अपना सब कुछ कुर्बान कर देने पर आमादा थे। इस प्रकार की हृदय विदारक अनेकानेक घटनायें जो इतिहास में सुरक्षित हैं, प्रस्तुत की जा सकती हैं। यह सब घटनायें यही सिद्ध करती हैं कि आपके अनुयायियों में आपके प्रति अटूट विश्वास था कि आप वास्तव में ईश्वर के अन्तिम सन्देष्टा हैं। आपके व्यक्तित्व में यदि कहीं कोई झोल होता या आपके विश्वास में कहीं कोई कमी देखते तो यह असहनीय यातनायें और खतरे मोल लेने की शक्ति किसी में न होती। अटूट ईश्वरीय विश्वास और ईश्वरीय शक्ति ही असहनीय यातनायें सहने की शक्ति एवं साहस प्रदान कर सकती है। इन यातनाओं और अत्याचारों का सिलसिला एक दो दिन नहीं, वर्ष दो वर्ष नहीं, पूरे तेरह वर्ष मक्का में जारी रहा। यातनाओं, सामाजिक बहिष्कार से लेकर वध करने तक की योजनायें बना डाली गईं, परन्तु ईश्वर आपका रक्षक था और रक्षा करता रहा।

गम्भीरतापूर्वक सोचिये कि उस नेक इंसान ने यह सब यातनायें क्यों झेली, जबकि उसकी क़ौम उसे बादशाह बनाने को तैयार थी, उसके कदमों में धन का ढेर लगाने पर आमादा थी, लेकिन उसने इन तुच्छ चीजों को ठुकरा दिया। उसका जुर्म केवल यही तो था कि वह कहता था कि ईश्वर एक है उसी की पूजा करो, यह मूर्तियाँ और पत्थर जिन्हें तुम पूजते हो किसी प्रकार का कोई लाभ–हानि नहीं पहुँचा सकतीं। यह लूटमार, शराब, जुआ, व्यभिचार जो तुम करते हो सब पाप

है। श्रेष्ठता और बड़ाई इंसान के गोत्र, ख़ानदान, रंग रूप, धन दौलत में नहीं है। ईश्वर के निकट वही सर्वश्रेष्ठ है जो ईश्वर से डरने वाला है। सब इंसान बराबर हैं, मरने के बाद तुम्हारे कर्मों की पूछ ताछ होगी।

सत्य को स्वीकारने एवं उसपर चलने में बाधायें, कष्ट, कठिनाइयाँ उस समय भी थीं और आज भी हैं, परन्तु मृत्यु के बाद आने वाले जीवन की यातनाओं के मुकाबले में यह कुछ भी नहीं है। जीवन के कितने क्षण शेष हैं?...... विचार कीजिये और सत्य को अपनाने में देर न कीजिए क्योंकि वर्तमान सांसारिक जीवन, मृत्यु का आरम्भ है और मृत्यु दूसरे जीवन की शुरूआत है जो अनन्त है और कभी समाप्त न होगी। वहाँ का सुख और वहाँ का दुख हमेशा हमेश का होगा।

मदीना हिजरत करने का ईश्वरीय आदेशः–

हिजरत, हिज्र शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ त्याग करने एवं छोड़ देने के हैं। इस्लाम की परिभाषा में जब कभी कोई व्यक्ति, संघ, संगठन एवं सम्प्रदाय सुयोग्यता व सच्चाई के किसी उच्च उद्देश्य के लिये अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु (धन, दौलत, आराम व राहत, प्रिय सम्बन्धी गणों, एवं वतन आदि) को छोड़ एवं त्याग दे तो उसी का नाम हिजरत इलल्लाह है। ईश्वर के हर सन्देष्टा और उसके सच्चे अनुयायियों को सदैव सत्य स्थापित करने की राह में यह मंजिल तय करनी पड़ी है। हिजरत के लक्ष्य एवं उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के लिये ही अन्तिम सन्देष्टा और उनके अनुयायी कष्ट पर कष्ट और यातनाओं पर यातनायें सह रहे थे। परन्तु इन असहनीय यातनाओं और कष्टों का सिलसिला जब कम नहीं हुआ तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुसलमानों को मक्का छोड़ हब्शा चले जाने का इशारा किया। कुछ मुसलमानों के चोरी छुपे रात

के अंधेरे में निकल जाने और हब्शा पहुँच जाने की सूचना जब शत्रु सरदारों को हुई तो वे बौखला उठे। वे मुसलमानों को हब्शा से वापस लाने के प्रयास में लग गये। हब्शा के राज दरबारियों एवं अधिकारियों को तोहफ़े भेंट कर उन्हें अपने पक्ष में करने में जब सफल हो गये तो इन सरदारों की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। दरबारियों ने बादशाह के समक्ष मक्का के सरदारों के समर्थन में बात रखी और पूर्ण प्रयास किया कि बादशाह एकतरफ़ा फैसला कर दे, परन्तु उसने ऐसा न करके दोनों पक्षों को दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया। बादशाह के समक्ष मक्का के सरदारों ने अपनी बात रखी, फिर हज़रत जाफ़र रज़ि0 ने मुसलमानों की ओर से कुछ कहने की इजाज़त चाही। इजाज़त मिलने पर आपने कहा कि– ऐ बादशाह! हम लोग एक जाहिल क़ौम थे, बुतों को पूजते थे, मुर्दार खाते थे, व्याभिचार करते थे, पड़ोसियों को सताते थे, भाई–भाई पर ज़ुल्म करता था, ताक़तवर कमज़ोरों को खा जाया करते थे। इसी बीच हम में एक व्यक्ति उठा जिसकी सज्जनता एवं पवित्रता, सच्चाई व ईमानदारी से हम लोग परिचित थे। उसने हमको उपदेश दिया कि हम पत्थरों, मूर्तियों एवं बुतो को पूजना छोड़ दें, सत्य बोलें, मारकाट, लड़ाई झगड़े न करें, अनाथों का माल न खायें, पाकदामन औरतों पर लाँछन लगाकर उनको बदनाम न करें, नमाज़ पढ़ें, रोजे रखें, दान करें। हम लोग उस पर ईमान ले आये, बुतों को पूजना छोड़ दिया, बुरे कर्मों से दूर रहने लगे इसी जुर्म में हमारी क़ौम हमारी जान की दुश्मन हो गयी और हम को मजबूर करने लगी कि हम फिर इसी गुमराही में लौट आयें। अतः हम अपना ईमान और अपनी जानें लेकर आपके यहाँ भाग कर आये हैं, अगर हमारी क़ौम हमको वतन में रहने देती तो हम न निकलते। बादशाह ने यह

बातें सुनने के बाद मुसलमानों के पक्ष को स्वीकार किया और उन्हें सौंपने से इनकार कर दिया। इस असफलता के बाद बौखलाहट और क्रोध का बढ़ना स्वभाविक था।

मुसलमानों का छुप छुपाकर मदीना व हब्शा की ओर हिजरत करना उनके क्रोध की ज्वाला को और भड़का रहा था। कहते है कि हिंसा, दमन किसी ढह रही व्यवस्था का आख़िरी शस्त्र होता है और जब यह कारगर नहीं होता तब शत्रुओं एवं विरोधियों की नीति यह होती है कि वे क्रान्ति के दूत को रास्ते से हटा दें। इसी सोच को लेकर मक्का के सरदारों ने संयुक्त सभा करके मुहम्मद सल्ल0 को मार डालने का निर्णय लिया और उसी रात आपके घर को घेर लिया। ईश्वर ने आपको शुत्रुओं के इस निर्णय की सूचना और मक्का छोड़ मदीना जाने का आदेश वह्य द्वारा दिया। आप मक्का छोड़ मदीना जाने की तैयारी में लग गये। उधर शत्रु नंगी तलवारें लिये इस प्रतीक्षा में घात लगाए बैठे थे कि आप बाहर निकलें और काम तमाम कर दें। परन्तु आप ईश्वाणी पढ़ते हुए गुज़र गये और वह लोग उन्हें देख न सके। आदमी सोचता कुछ है और हो कुछ ओर जाता है। इसी प्रतीक्षा में सुबह हो गई। शत्रुओं को जब मालूम हुआ कि मुहम्मद सल्ल0 निकल गये तो उनको ढूँढने और पकड़ने के तमाम प्रयास किये गये परन्तु असफल रहे। अन्ततः आप सल्ल0 मक्का छोड़ मदीना को हिजरत कर गए।

विजय के बाद परिस्थितियाँ बदल गयीं, पैगम्बर नहीं बदला

आप के वतन (मक्का) छोड़ देने के बाद भी शत्रु शाँत न हुए। वे निरन्तर षड़यंत्र व छेड–छाड़ द्वारा परेशान करते रहे। इन कठिनाईयों, बाधाओं, यातनाओं एवं षड़यंत्रों के बीच ईश्वरीय सन्देश अवतरित होता और फैलता रहा, जबकि विरोधी शक्तियाँ इस सन्देश व पैग़ाम की लौ को पूर्ण शक्ति के साथ बुझा देने पर आमादा थीं। कुरैश को यह गवारा न था कि मानवता का

उपकारक व क्रान्ति का यह दूत ज़मीन के किसी भाग में जिन्दा रहे या कहीं भी बैठ कर अपने मिशन को चला सके। इसी लिए उनके क़त्ल पर एकमत हो जाना और ईनाम की घोषणा उनकी मजबूरी थी। मक्का में कुरैश और उनके हिमायती क़बीले और दूसरी तरफ़ मदीना में यहूदी व मुनाफ़िक़ (कपटचारी) मुसलमानों के दुशमन थे। इस तरह मुसलमान चक्की के दो पाटों में पिस रहे थे। कुरैश मक्का से मदीना आ–आ कर छेड़–छाड़ करते। जब उनपर मदीना के यहूदियों व मुनाफ़िक़ो की इस्लाम दुशमनी स्पष्ठ हो गई तो कुरैश मक्का ने आक्रमण की योजना बनाई। पैगम्बर मुहम्मद सल्ल0 को अब प्राण रक्षा व धर्म रक्षा हेतु मजबूरन जंग के लिये तैयार होना पड़ा। बद्र के मुक़ाम पर पहली बार जंग में पैगम्बर मुहम्मद सल्ल0 के नेतृत्व में 313 सच्चे ईश भक्तों ने जिनके पास न पर्याप्त मात्रा में हथियार थे और न ही खाद्य सामग्री, मगर 1000 हथियार बंद शक्तिशाली शत्रुओं पर प्रभु की मदद से विजय प्राप्त की। दुश्मन के बड़े–बड़े नामी सरदार इस जंग में मारे गये। बहुत से क़ैदी बनाए गये, इस पराजय के बाद शत्रुओं की शत्रुता की ज्वाला और दहक उठी। वे युद्ध छेड़ते रह, मुसलमान सुरक्षात्मक जंग लड़ते रहे। ज्ञात हो कि सारी बड़ी–बड़ी लड़ाइयाँ चाहे बद्र हो, उहद हो या खन्दक सब कुरैश मक्का के आक्रमण के कारण मुसलमानों को अपनी प्राण रक्षा एवं धर्म रक्षा हेतु लड़नी पड़ीं। मुसलमानों ने जितनी भी जंगें लड़ीं उनका मक़सद सिकन्दर व निपोलियन की तरह दुनिया पर विजय प्राप्त करने का कभी नहीं रहा और न हालैंड, फ़्राँस और इंगलैंड की तरह आज़ाद क़ौमों की आज़ादी छीन कर उन्हें ग़ुलाम बनाने का रहा। मुसलमानों को लड़ाई का आदेश केवल अपने धर्म व प्राण रक्षा के लिए ही है, बाक़ी किसी और उदेश्य से जंग करना मना है।

इस्लाम अमन का मज़हब और जंग का विरोधी है।

इस्लाम ने हमेशा जंग के बजाए सुलह को प्राथमिकता दी। "सुलह हुदैबिया" इस्लाम के इतिहास की एक आदर्श घटना है जो इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम जंग का मज़हब नहीं है। कुरैश के सरदारों की एक तरफ़ा कड़ी एवं अपमानी शर्तों को केवल शान्ति स्थापना हेतु हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने इसलिए मान लिया कि वह ईश्वरीय ज़िम्मेदारियों का सुकून से पालन कर सकें। इस सुलह (संधि) के परिणाम स्वरूप कुछ वर्षों में ही इस्लाम की शिक्षा इस तेज़ी से फैली कि दुनिया चकित रह गई। उस समय की जो भी बड़ी बड़ी शक्तियाँ इस्लाम के मुक़ाबले में उठीं वे हताश व पराजित होकर आपके चरणों में आ गिरीं। आप सल्ल0 ने जब मक्के पर विजय प्राप्त की तो आपने सब को क्षमा कर दिया। यह क्षमा दान उनके लिये भी था जिन्होंने आप पर पत्थर फेंके थे, मार्ग में काँटे बिछाये थे और उनके लिये भी था जिन्होंने आप को वतन से निकाला था, आपकी हत्या करने के प्रयास किये थे। इस प्रकार 23 वर्ष की अवधि में आपने अपने नैतिक आचरण, नेकी व पवित्र स्वभाव की नम्रता से शत्रुओं के ह्रदय को जीत लिया। वह अरब जो कल तक आपकी जान के प्यासे थे वही आप पर अब जान न्योछावर करने को तैयार थे।

प्राफेसर के0 एस0 रामा कृष्णा राव अपनी पुस्तिका "इस्लाम के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0" में लिखते हैं कि: "मक्का पर विजय के बाद आप पूरे अरब के मालिक थे लेकिन फिर भी वे मोटे झोटे वस्त्र धारते और जूतों की मरम्मत स्वयं करते, बकरियाँ दुहते, घर में झाडू लगाते, आग जलाते और घर परिवार का छोटे से छोटा काम भी खुद कर लेते। आपके जीवन के आखिरी दिनों में पूरा मदीना धनवान हो चुका था, हर जगह सोने चाँदी की बहुतायत थी, लेकिन इसके बावजूद अरब के इस सम्राट के घर में कई–कई हफ़्ते तक चूल्हे न जल पाते थे

और खजूरों और पानी पर आपका गुज़ारा होता था। आपके घर वालों की लगातार कई कई रातें भूखे पेट गुज़र जातीं क्योंकि उनके पास शाम को खाने के लिये कुछ भी न होता था। तमाम दिन व्यस्त रहने के बाद रात को आप नर्म बिस्तर पर नहीं, बल्कि खजूर की चटाई पर सोते। अकसर ऐसा होता कि आपकी आँखों से आँसू बह रहे होते और आप अपने सृष्टा से दुआयें कर रहे होते कि आपको ऐसी शक्ति दे कि आप अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर सकें। आपके देहान्त के दिन आपकी कुल पूँजी कुछ थोड़े से सिक्के थे, जिनका एक भाग क़र्ज़ की अदायगी में काम आया और बाकी जरूरत मंदों को दान दे दिया गया। जिन वस्त्रों में आपने अन्तिम सांस लिया उनमें 32 पेवन्द लगे थे। वह घर जिससे पूरी दुनिया में रोशनी फैली वह ज़ाहिरी तौर पर अंधेरे में डूबा हुआ था क्योंकि चिराग़ जलाने के लिये घर में तेल न था। परिस्थितियाँ बदल गयीं लेकिन खुदा का पैगम्बर नहीं बदला। विजय हुई हो या हार, सत्ता प्राप्त हुई हो या इसके विपरीत की स्थिति हो, खुशहाली रही या ग़रीबी, प्रत्येक दशा में आप एक से रहे, कभी आपके उच्च चरित्र में अन्तर न आया। खुदा के मार्ग और उसके क़ानूनों की तरह खुदा के पैग़म्बर में भी कभी कोई तब्दीली नहीं हुआ करती।''

श्री राजेन्द्र नरायण लाल अपनी पुस्तक ''इस्लाम एक स्वयं सिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था'' में लिखते हैं कि– ''मुहम्मद साहब की सादगी में न तो धनी पत्नी के विवाह के बाद कोई अन्तर आया और न पैग़म्बर का पद प्राप्त करने और अरब के सर्वे सर्वा होने के बाद। उन्होंने अपना सारा जीवन अत्यन्त सादगी से बिताया, वे किसी भेद भाव के बिना सभी के परोपकारक थे। वे इतने दानशील थे कि क़र्ज़ लेकर भी दूसरों की आवश्यकतायें पूरी करते थे। उनमें कोई भी नैतिक दोष नहीं था। वे साक्षात सत्यता, ईमानदारी, पवित्रता, दया, और शान्ति

के दूत एवं उदारता और दयालुता के प्रतीक थे। दैनिक गृहस्थ जीवन बिताते हुए भी सर्वथा ईश्वर का चिन्तन करते रहते थे और सबके लिये यहाँ तक कि अपने विरोधियों के कल्याण के लिये प्रार्थना करते। रात को उठ–उठ कर नमाज़ पढ़ते। मक्का विजय के बाद मुहम्मद सल्ल0 ने उस ज़ालिम को भी क्षमा कर दिया था जिसने उनकी एक कन्या को ऊँट से गिराकर अति कष्ट पहुँचाया था। इतिहास इस प्रकार की क्षमा शीलता का उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकती। निःसंदेह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ईश्वरीय दूतों में सर्व श्रेष्ठ हैं। इस्लाम अपने नाम से ही महत्त्वपूर्ण और अर्थपूर्ण है इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है कि– ''ईश्वर की इच्छा के आगे पूर्ण रूप से नतमस्तक हो जाना'' इस प्रकार प्रारम्भ ही में इस्लाम ऐकेश्वरवाद का सूचक हो जाता है। इस्लाम मुहम्मडिज़्म नहीं है। ईश्वर प्रदत्त आदि धर्म है। मुहम्मद साहब अन्तिम ईश्वर दूत थे यह इस्लाम नाम से ही सिद्ध है''।

अमेरिका में एक पुस्तक 'The 100' नाम से 1978 ई0 में छपी है जिसके लेखक डा0 माइकल हार्ट (Michael H.Hart) जो ईसाई वैज्ञानिक हैं, उन्होंने बहुत शोध के बाद 100, ऐसे महान व्यक्तियों का चयन किया जिनके व्यक्तित्व ने पूरे संसार पर अनमिट असर छोड़ा। उस सूची में लेखक ने अपने पूज्य ईसा अलै0 के बजाय हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को नम्बर 1 पर रखा और उनके व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि:

> *"He was the only man in history who was supremely successfull on both the religious and secular levels."*

इस बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि इतिहास में ग़ैर मुस्लिमों की नज़र में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का क्या स्थान है।

ग़लत है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला

इस्लाम के तलवार के ज़ोर से फैलने का प्रचार मिथ्या व निराधार है। इस्लाम के फैलने का कारण उसकी सत्यता, दर्शन और तर्क है। मुसलमानों ने 800 वर्ष स्पेन पर शासन किया परन्तु एक उदाहरण भी प्रस्तुत नहीं किया जा सकता कि किसी को इस्लाम स्वीकारने पर विवश किया गया हो। वे चाहते तो अपनी शक्ति के बल पर प्रत्येक ग़ैर–मुस्लिम को इस्लाम स्वीकारने के लिए बाध्य कर देते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। यदि ऐसा किया होता तो भारत में आज 80% हिन्दू न होते। इंडोनेशिया, मलेशिया और अफ्रीका में बड़ी संख्या में जो मुसलमान आबाद हैं, आखिर उन्हें कौन सी सेना मुसलमान बनाने गई थी जबकि वहाँ कोई युद्ध हुआ ही नहीं। आज अमेरिका व यूरोप में जिस तेज़ी के साथ इस्लाम फैल रहा है उस के पीछे कौन सी तलवार काम आ रही है? क्या यह तमाम बातें इस बात को प्रमाणित नहीं करतीं कि इस्लाम तलवार की ज़ोर से नहीं फैला।

अन्तिम ईश दूत का वर्णन दूसरे धर्मग्रन्थों में

मेरे भाइयों एवं बहनों! अन्तिम ईश दूत के आने की सूचना हर आने वाले सन्देष्टा द्वारा उनके ग्रंथों में दी गई है। यह भी इस्लाम की सत्यता का प्रमाण है कि प्राचीन ग्रंथों में अत्यन्त फेर बदल के बावजूद उसका उल्लेख वस्तुतः सभी प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। वेदों में उसका नाम "नराशंस", पुराणों में "कल्कि अवतार", बाइबिल में "फारकलीत" और बौद्ध ग्रंथों में "अन्तिम बुद्धा" व "मैत्रेय" कहा गया है। इन ग्रंथों में मुहम्मद सल्ल0 का जन्म, तिथि, समय एवं बहुत से वास्तविक लक्षणों का वर्णन मिलता है। उन प्राचीन ग्रंथों में मुहम्मद सल्ल0 के सम्बन्ध में बहुत से वास्तविक लक्षण पहले ही बता दिये गए

थे।[1] आप के अन्तिम सन्देष्टा होने का प्रमाण जहाँ प्राचीन ग्रंथों में वर्णित है वहीं इस्लाम के चौदह सौ वर्ष बीत जाने के बाद भी किसी विश्व व्यापी धर्म के संदेष्टा का न आना भी है।

ईमान की हक़ीक़त एवं उसका प्रभाव :–

अब प्रश्न पैदा होता है कि ईमान क्या है?....ईमान "ज्ञान और विश्वास" का नाम है। ईमान का अर्थ है जानना और मानना। ईमान के बिना कोई इंसान मुस्लिम नहीं हो सकता है और मुस्लिम का ईमान यह है कि ईश्वर एक है और मुहम्मद सल्ल0 उसके अन्तिम ईशदूत हैं। इंसानों को दुनिया में किए गए कर्मों का आख़िरत में हिसाब देना होगा, जिसके फलस्वरूप उसे स्वर्ग या नरक का भागी बनाया जायेगा। ईमान भय और आशा के बीच एक संतुलित मनोदशा है, इसमें ईश्वर के दण्ड का भय और उसके पुरस्कार की कामना निहित है। जिस दिल में ईमान होगा उस में निराशा न होगी। जहाँ निराशा होगी वहाँ या तो ईमान न होगा और या होगा तो बहुत ही कमज़ोर। क्योंकि ईमान और निराशा दोनों एक दिल में जमा नहीं हो सकती। जो लोग ईमान से वंचित हैं जब भौतिक साधन उनका साथ छोड़ देते हैं या भैतिक साधनों से वंचित हो जाते हैं तो संसार उनके लिये अंधेरा हो जाता है। उदासी, निर्बलता उन्हें इस हद तक घेर लेती है कि अन्याय, अत्याचार, उद्दण्डता के आगे घुटने टेक देते हैं। ऐसे मनुष्यों की मनोदशा कष्ट और विपत्ति के हर मोड़ पर देखने योग्य होती है। परन्तु मोमिन (सच्चा मुस्लिम) केवल ईश्वर पर विश्वास रखता है संसाधनों पर नहीं। संसाधनों को प्रयोग में

1. अधिक जानकारी के लिये प्रो0 वेद प्रकाश उपाध्याय की पुस्तक (1)"कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब", (2)"नराशंस और अन्तिम ऋषि"। डा0 एम0 ए0 श्रीवास्तव की पुस्तक "हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्म ग्रन्थ"। विकासानन्द ब्राहम्चारी की पुस्तक "अन्तिम ऋषि व कल्कि अवतार का अध्ययन करें।

लाता ज़रूर है और प्रयोग में लाने का हुक्म भी है, लेकिन सफलता के लिए संसाधनों को बुनियाद नहीं बनाता। उसका विश्वास है कि ईश्वर संसाधनों से ज़िन्दगी बनाते भी हैं और यही संसाधन बिगाड़ का कारण भी बनते हैं, सफलता भी देते हैं और असफल भी कर देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जो कुछ भी होता है चीजों एवं संसाधनों से नहीं होता, ईश्वर के हुक्म एवं उसकी कुदरत से होता है। यही विश्वास और यक़ीन मोमिन का सब से बड़ा हथियार है, जो लोहे और पत्थर जैसी सख़्ती व शक्ति और पहाड़ जैसी मज़बूती प्रदान करता है।

पिछले पृष्ठों में ईमान लाने वालों के वृतान्त दर्शाए गए हैं। इन ईमान लाने वालों की पूर्व व पश्चात् की ज़िन्दगी का अध्ययन कीजिये फिर सोचिये, विचार कीजिये कि जो कल तक मन और शरीर से दासता की ज़ंज़ीरों में जकड़े रहने पर संतुष्ट थे, ईमान लाने के बाद अब वही इस ज़ंजीर को तोड़ और काट देने पर आमादा थे। कष्ट पर कष्ट, यातनाओं पर यातनायें और अन्याय व अत्याचार का वह कौन सा शस्त्र है जिसे उन पर इस्तेमाल न किया गया हो लेकिन उन्हें ईमान से न डिगा सके।

सच्चाई तो आत्मा की आवाज़ है, यह किसी की धरोहर व मिल्कियत नहीं है। यह सम्पूर्ण मानव जाति की निधि है। सच्चाई को स्वीकारना हर बन्धन व बाधा से अपने को मुक्त करना है। समाज या परिवार का विरोध, शासन व सत्ता का अंकुश, धन या सम्पति के छिन जाने का भय, सच्चाई के मार्ग का रोड़ा नहीं बन सकता। संसार में जब भी सत्य को स्वीकारने वालों ने सत्य स्वीकारा है उनके समक्ष तरह–तरह की बाधायें, कष्ट व कठिनाइयाँ, अनेकों रंग व रूप में भेष बदल–बदल कर आती रहीं परन्तु उन्हें सत्य के मार्ग से विचलित न कर सकीं। सत्य का सम्बन्ध किसी के कहने और सुनने से नहीं है स्वयं के अपने सोचने और मानने से है। वह लोग कितने नादान व भोले

हैं जो अपनी विवेक व बुद्धि को संसार के संसाधनों की प्राप्ति में दिन रात लगाए रहते हैं जिसे अन्ततः चाहे अनचाहे छोड़ना ही है। यदि उसका कुछ अंश भी सत्य को जानने एवं समझने में लगा दें तो पूर्ण आशा और विश्वास है कि सत्य उन मनुष्यों पर अवश्य खुल जायेगा और उनकी अन्तरात्मा स्वंय पुकार उठेगी कि सत्य यही है, सत्य यही है। अफ़सोस है कि मनुष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या अज्ञानतावश अचेतन में पड़ी हुई है और मौत से ग़ाफिल होकर जीवन व्यतीत कर रही है। मौत क्या है? ...... जीवन कितना बचा है?...... फिर आख़िर जीवन भर की पूंजी (धन, धान्य, सम्पति एवं परिवार) को छोड़ते कैसा लगेगा?...... सोचिये विचार कीजिये, चिन्तन कीजिये और अपने हृदय पर हाथ रखकर अपनी अन्तरात्मा से पूछिये?...... प्रसन्नता या अप्रसन्नता से हर हाल में इस संसार को छोड़ना पड़ेगा फिर मरने के बाद क्या होगा?[1] सत्य को जानने व अपनाने के लिए मृत्यु तक का अवसर प्राप्त है। इस अवसर को अचेतन में पड़े रहकर जिसने खो दिया और ईश्वर द्वारा दी हुई बुद्धि एवं विवेक से काम न लिया उन्हें भारी पछतावा होगा। फिर उन्हें कहीं से कोई मदद न मिल सकेगी।

मृत्यु और उसके पश्चात की हक़ीक़त :–

जिसने सृष्टि रची है, जो समस्त संसार का पैदा करने वाला है, जो सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रों का भी मालिक है, जिसके हाथ में जीवन और मृत्यु की डोर है, वही जानता है कि मृत्यु के पश्चात क्या होगा? उसने यह बात अपने सन्देष्टाओं द्वारा मनुष्यों को बताई है कि मरने के बाद एक और जीवन भी है जो सदैव बाक़ी रहने वाला है। हज़रत आदम अलै० से लेकर संसार में जितने भी सन्देष्टा आये सबने परलोक (आख़िरत) के बारे में

1. इस विषय में सै० अबुल आला मौदूदी की पुस्तक "जीवन मृत्यु के पश्चात" एवं श्री वहीदुद्दीन खां की पुस्तक "इंसान अपने आपको पहचान" का अध्यन करें।

बताया और यही बात अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने भी बताई। दुनिया के तमाम प्राचीन धार्मिक ग्रंथ जो विकृत एवं परिवर्तित अवस्था में आज हमारे सामने मौजूद हैं, सभी में परलोक (आख़िरत) प्रलय (क़यामत) स्वर्ग (जन्नत) नर्क (दोज़ख़) का वर्णन किसी न किसी रूप में मिलता है। सभी सन्देष्टाओं ने उस व्यक्ति को काफ़िर माना है जो परलोक[1] का इन्कारी हो या उसमें सन्देह करता हो। ईश्वर ने अपने पवित्र ग्रंथ कुरआन में और अन्तिम संदेष्टा ने हदीसों में इस सिलसिले में जो वर्णन किया है उसका संक्षिप्त साराँश हज़रत मौलाना मंजूर अहमद नोमानी रह0 अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "इस्लाम क्या है?" में लिखते हैं कि, मृत्यु के बाद तीन मंज़िलें आनेवाली हैं। पहली मंजिल मृत्यु के समय से लेकर प्रलय आने तक की है जिसे यमलोक (आलम–ए–बरज़ख) कहते हैं। मृत्यू के बाद मनुष्य का शरीर चाहे ज़मीन में दफ़न कर दिया जाये, चाहे नदी में बहा दिया जाये, चाहे जला कर राख कर दिया जाये लेकिन उसकी आत्मा (रूह) किसी हालत में भी नष्ट नहीं होती। सिर्फ इतना होता है कि वह वर्तमान संसार से स्थानान्तरित होकर एक दूसरी दुनिया में चली जाती है। वहाँ ईश्वर के फरिश्ते उसके दीन व धर्म अर्थात (ईमान) से सम्बन्धित प्रश्न करते हैं। यदि वह सच्चा ईमान वाला होता है तो ठीक–ठीक उत्तर देता है फिर फ़रिश्ते उसको खुशख़बरी सुनाते हैं कि तू प्रलय तक सुख चैन से रह और यदि वह ईमान वाला नहीं होता बल्कि काफ़िर या नाम का मुसलमान या मुश्रिक होता है तो उसी समय से उसे कठिन यातना और मुसीबत में डाल दिया जाता है जिसका सिलसिला प्रलय तक जारी रहेगा। यह यमलोक (बरज़ख) की मंज़िल है।

इसके बाद दूसरी मंज़िल प्रलय (क़यामत) की है। प्रलय का अर्थ यह है कि एक समय ऐसा आयेगा कि ईश्वर के हुक्म

1. परलोक के समबन्ध में तर्क संगत एवं बुद्धि संगत विस्तृत जानकारी के लिये मौलाना मौदूदी की "इस्लाम प्रवेशिका" का अध्ययन करें।

से यह समस्त संसार नष्ट–भ्रष्ट कर दिया जाएगा। इसके पश्चात् ईश्वर दुनिया के समस्त इंसानों को पुनः जीवित करेगा और वर्तमान संसारिक जीवन में किये गये अच्छे और बुरे कर्मों का हर मनुष्य से हिसाब लेगा। जो सफल होंगे उन्हें स्वर्ग उनके नेक कर्मों और ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा के पुरस्कार रूप में मिलेगी और कुफ़्र व शिर्क (वास्तविक ईश्वर को छोड़ कर काल्पनिक ईश्वरों की पूजा एवं दूसरों को ईश्वर के समकक्ष समझना) और ईश्वर से ग़द्दारी और उसकी अवहेलना के दण्ड और यातना के रूप में नर्क मिलेगी। जहाँ भयंकर यातनाएँ झेलनी पड़ेगी।

विचार करने की बात

मेरे भईयों एवं बहनों! न्याय दिवस के दिन प्रत्येक मनुष्य से प्रश्न किया जाएगा कि तूने सत्य–पथ (धर्म) को खोजने, समझने एवं उस पर चलने की कोशिश क्यों नहीं की? छूट जाने वाले संसार एवं संसारिक वस्तुओं के लिये जीवन भर दौड़ भाग एवं परिश्रम करता रहा। न्याय व इंसाफ की सीमा का उल्लंघन पर उल्लंघन कर के शानदार भवन, अत्यन्त मूल्यवान वस्तुयें एवं धन–सम्पति जोड़–जोड़ कर रखता रहा। जब कभी तुझको सचेत करने वालों ने जगाने की कोशिश की तो अचेतन की मस्त नींद सोता रहा, और जब भलाई एवं सत्य मार्ग की ओर बुलाया गया तूने मुँह मोड़ लिया, कुछ अमल न किया। किसी ने परलोक की याद दिलाई, तूने उसे झुठला दिया। बता उस समय तू क्या उत्तर देगा? मृत्यु से तू बच सकता नहीं। क्या मृत्यु से बचने का तूने कोई उपाय सोचा है? यदि नहीं तो अब भी अवसर है सोच लें और वहाँ जाने के लिये सत्य मार्ग को अपना लो। किसी के कहने से नहीं, स्वयं सोच–विचार कर, चिन्तन मनन करके, हर दृष्टिकोण से जाँच परख कर। फिर

कुछ तैयारी कर लो, जीवन का कुछ भरोसा नहीं।

क्यों नहीं सोचते कि इंसान के बस में स्वयं उसका अपना व्यक्तित्व भी नहीं है, यदि बस में होता तो कोई व्यक्ति बीमार, निर्बल, एवं निर्धन न हुआ करता। इंसान के व्यक्तित्व एवं अधिकारों में रात–दिन जो परिवर्तन होते रहते हैं वह उसे दर्शाते हैं कि ऐ इंसान तू पूर्णतयः स्वतंत्र नहीं है, किसी के प्रति जवाब देही करनी है, जीवन की वास्तविकता को समझना है। ईश्वर अपने पवित्र ग्रंथ क़ुरआन में फर्माता है कि:–

"जब मौत आवेगी तो (इंसान) कहेगा कि ऐ मेरे रब यदि थोड़ी सी अवधि के लिये मुझको छूट मिल जाती तो मैं भलाई के काम कर लेता और नेक लोगों में हो जाता"।

समस्त मानव जाति से हार्दिक अपील :–

मेरे भाइयों एवं बहनों! जिसने इस जीवन की वास्तविकता (हक़ीक़त) को समझ लिया उसने सब कुछ पा लिया और जो इस हक़ीक़त को न समझ पाया उसने अपना सब कुछ खो दिया। क्योंकि मृत्यु के बाद न दोबारा कोशिश करने का अवसर मिलेगा और न परलोकिक जीवन कभी ख़त्म होने वाला है। क्या अच्छा होता इंसान मौत से पहले इस हक़ीक़त को समझ लेता, मौत के वक़्त जागने का कोई फ़ायदा नहीं। निःसन्देह एक ऐसा दिन आकर रहेगा, जिस दिन आदमी अपने भाई, अपने माँ–बाप, अपनी पत्नी और अपनी संतान से भागेगा। उसमें से हर एक पर उस दिन ऐसा समय आ पड़ेगा कि उसे अपने सिवा किसी का होश या चिन्ता न होगी। वहाँ वे पूज्य भी जिन्हें इस दुनिया में पूजा जाता था कहेंगे कि न हमने कभी कहा था कि हमारी इबादत करो और न हमें यह ख़बर थी कि यह नादान लोग हमारी पूजा कर रहे हैं।

अन्त में इतनी बात और कहना चाहते हैं कि जहाँ कुछ

ईश्वर के बन्दे सत्य–पथ को खोजने, समझने, परखने एवं उसपर चलने का निमंत्रण दे रहे है, वहीं इसके विपरीत कुछ लोग इससे दूर रहने की, इन झंझटों में न पड़ने की, जो कुछ कर रहे हो करते रहने एवं विवेक और बुद्धि न लगाने, सत्य के प्रति भ्रम पैदा करने का कार्य भी कर रहे हैं। यह कार्य आज ही नहीं, सदैव से होता रहा है। इसलिये समस्त मानव जाति से निवेदन है कि वह किसी के कहने, किसी के सुनने, किसी को देखने के चक्कर में न आयें। हर उस कार्य को जो मुसलमान करते हों इस्लाम नहीं कहा जा सकता। इस्लाम एक शाश्वत सत्य–धर्म है, इस सत्य धर्म के दो उद्‌गम हैं। एक ईश्वरीय ग्रंथ क़ुरआन और दूसरा संदेष्टा के कथन एवं उनका आदर्श जीवन जिन्हें हदीस कहा जाता है। जो लोग क़ुरआन और हदीस के विरूद्ध आचरण कर रहे हैं या इन दोनों से हटकर जीवन गुज़ारने के अभिलाषी हैं या जिनकी आस्था क़ुरआन और हदीस में नहीं है वह कुछ और तो हो सकते हैं लेकिन मुसलमान नहीं हो सकते, इसलिए किसी के नाम से एवं किसी के आचरण से धोखा न खायें। स्वयं सोचें, स्वयं विचारें, आत्म–मंथन करें, ज्ञान के स्रोतों को काम में लायें, अपनी अन्तरात्मा से पूछें कि सत्य क्या है? असत्य क्या है? फिर अपना फ़ैसला करें।

यह है सच्चाई की संक्षिप्त रूप रेखा जो मैंने आपके समक्ष प्रस्तुत की है। विचार करना, सोचना एवं चिन्तन मनन करना अब आपका काम है। आप हर दृष्टिकोण से सोचिये, रात की तन्हाई में सोचिये या दिन के उजाले में सोचिये, लेकिन सोचिये ज़रूर। मेरा दायित्व मात्र इतना था कि मैं सत्य की खोज के प्रति आपको सचेत, जागरूक और प्रेरित करूँ और यह प्रयास मैंने निःस्वार्थ नहीं किया है, इसमें मेरा अपना स्वयं का स्वार्थ है, और स्वार्थ ये है कि प्रभु मुझसे राज़ी हो जाए।

हालांकि कर्म के ऐतबार से मैं अपने को बहुत ही कमज़ोर पाता हूँ परन्तु प्रयासरत हूँ और प्रार्थी हूँ कि ईश्वर मुझे नेक व अच्छा बना दे, कर्म से भी और विचारों से भी, और मेरी आन्तरिक एवं वाह्य कमज़ोरियों को दूर कर दे, और इस छोटी सी कोशिश को (जो ईश्वर की प्रेरणा से हुई) कुबूल कर ले। मेरी गलतियों को क्षमा कर दे, नरक से बचा ले, मुझसे प्रसन्न हो जाये। यही अभिलाषा अपने लिये भी है और समस्त मानव जाति के लिये भी।

ज्ञान छुपा कर मत रखिये! दूसरों तक पहुँचाइये
यह मानवीय प्रेम और सेवा का प्रतीक है।

क़ुरआन मजीद तथा इस्लाम के सम्बन्ध में अधिक जानकारी और भ्रान्तियों को दूर करने के लिए कृपया निम्न पुस्तकों का अध्ययन करें। इस सम्बन्ध में हर प्रकार की सहायता के लिए अल–कुरआन इन्स्टीट्यूट तत्पर है।
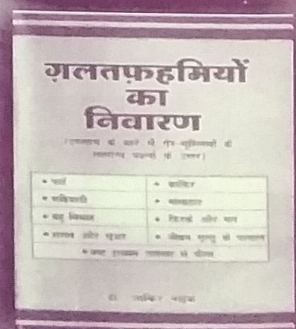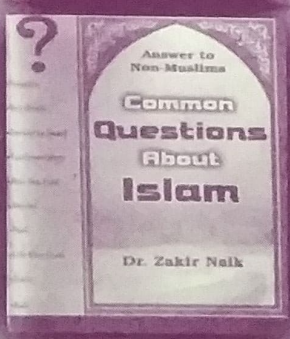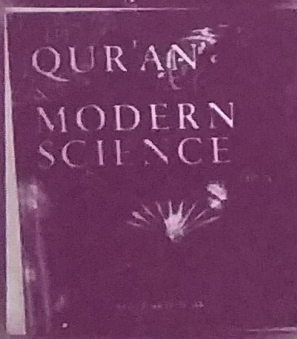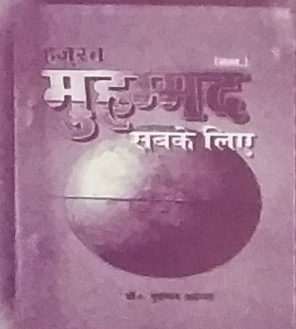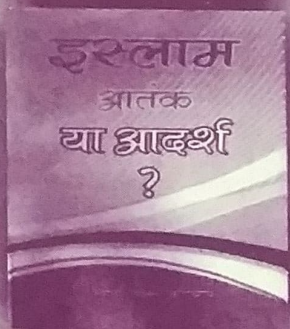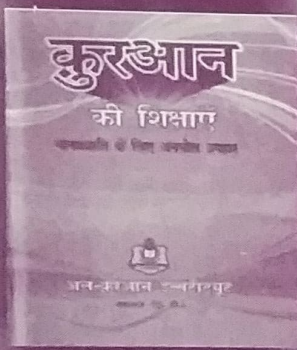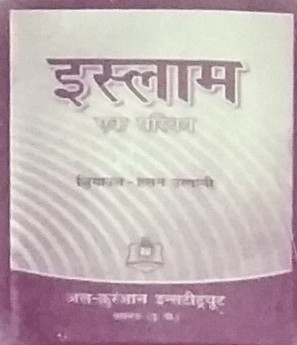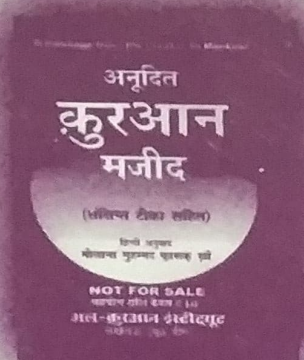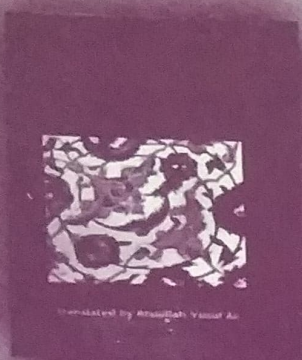
Al-Qur’an Institute

4th Floor, Burlington Square, Burlington Chauraha,
Vidhan Sabha Marg, Hussainganj, Lucknow - 226001 (U.P.)
Ph: 0522-3297421 Mob : 09335226077